Rashtriya Sahara **Date 12.May 2023**

शिकायत बॉक्स की ताकत

देश की राजधानी में एक तरफ कुछ लड़कियां अपने साथ हुईं ज्यादतियों के खिलाफ न्याय पाने को करीब पखवाड़े भर से ज्यादा दिन से आंदोलन की राह पर हैं। मसला अदालत की चौखट तक जा पहुंचा है। वहीं दिल्ली की ही दो बच्चियों की हिम्मत और सरकार की असाधारण पहल ने उनका हौसला टूटने नहीं दिया। यह कमाल हुआ है बच्चियों की हिम्मत और पुलिस की पहल से।

12 और 14 साल की दो बहनों से एक शख्स स्कूल आते-जाते वक्त छेड़खानी करता था। कई दिनों तक बच्चियों ने यह सब सहन किया, मगर छोटी बहन ने हिम्मत दिखाई और स्कूल में रखे 'निर्भीक बॉक्स' में सारी कहानी लिख कर डाल दी। रोजाना की तरह बॉक्स में शिकायत पत्र की पड़ताल करने पहुंची थाने की महिला हवलदार ने बच्चियों की आप बीती को वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों तक पहुंचाया। फिर क्या था; बच्चियों की काउंसिलिंग कराने के बाद छेड़छाड़ और पॉक्सो की धाराओं में मामला दर्ज कर अधेड़ आरोपी (51 वर्ष) को दबोच लिया। बच्चों की हिम्मत और समझदारी की जितनी सराहना की जाए कम है, मगर सरकार खास तौर पर दिल्ली पुलिस की पहल को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। बच्चियों की दिलेरी की चर्चा राष्ट्रीय स्तर पर होनी चाहिए। उन्होंने साबित किया कि साहस हमेशा दहाड़ता नहीं है। कभी-कभी साहस दिन के अंत में छोटी आवाज होती है जो कहती है कि मैं कल फिर से कोशिश करूंगा। वाकई शरीर की ताकत नहीं, बल्कि आपका हौसला मायने रखता है। भले यह पुलिस का छोटा सा प्रयास भर दिखे, मगर इसने न्याय पाने के रास्ते को काफी सहज और भयरहित बनाया है। एक शिकायती बॉक्स की ताकत कितनी है, यह इस घटना से महसूस की जा सकती है। निःसंदेह ऐसे प्रकरण अंधेरी गली में उम्मीद की लौ के समान हैं। फिलवक्त देश में बहन-बेटियों के साथ अन्याय की अनेकानेक वाकये रोजाना होते हैं। मगर लोग सिस्टम की जटिलता से पीड़िता हताश और परेशान हो जाती हैं। छेड़छाड़, यौन शोषण और हिंसक व्यवहार सिर्फ सड़क पर घटित नहीं होते, बल्कि कार्यालयों में भी ऐसे अपराध से सैकड़ों मां-बहनों का साबका आये दिन पड़ता है। साफ है कि या तो ऐसे बॉक्स उन ऑफिसों में नहीं लगाए गए या कई बहनों ने अपनी कहानी बताने से अपने कदम पीछे खींच लिए। खैर, इन दो बच्चियों की दिलेरी ने इस बात को साबित किया कि अपने जीवन की नायिका बनो, न कि पीड़िता।